Tender Heart High School, Sector-33 B, Chandigarh.

कक्षा- दसवीं
विषय- हिन्दी साहित्य   शिक्षिका- श्रीमती कल्पना शर्मा
पुस्तक - एकांकी संचय
पाठ-5 'महाभारत की एक साँझ' (एकांकी) लेखक-भरत भूषण अग्रवाल
निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(1) 'जो अपने सगे-संबंधियों को गाजर-मूली की भाँति - - - - - - - - - - - - - - - - उसकी लज्जा से क्या परिचय?

(क) उपर्युक्त कथन किसने, किससे किस संदर्भ में कहे हैं? अनहोनी बात से किस घटना की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर उपर्युक्त कथन युधिष्ठिर ने अपने छोटे भाई भीम से तब कहा जब महाभारत-युद्ध में कौरवों की सेना के सभी योद्धा मारे गए थे, केवल दुर्योधन ही बचा था और आत्मरक्षा के लिए द्वैत वन के सरोवर में जा छुपा था।

'अनहोनी बात' से उस घटना की ओर संकेत किया गया है जब भीम दुर्योधन को सरोवर से बाहर निकलने के लिए ललकारता है और कहता है कि अपने सारे सहयोगियों की हत्या करके सरोवर में जा छुपा था। तुझे लज्जा नहीं आती।

जब भीम ने इस 'लज्जा' शब्द का प्रयोग किया तब युधिष्ठिर ने इस शब्द को 'अनहोनी बात' कहा। उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि दुर्योधन जैसे निर्लज्ज पुरुष को लज्जा आना अनहोनी बात थी।

(ख) 'गाजर-मूली की तरह कटवाना' का प्रयोग किस उद्देश्य से किया गया है और क्यों?

उत्तर 'गाजर-मूली की तरह कटवाना' - इसका अर्थ है बहुत मामूली सी बात हो।

इस मुहावरे का प्रयोग युधिष्ठिर के द्वारा किया गया है। उनका संकेत महाभारत के युद्ध की तरफ़ है, जो केवल अठारह दिनों तक चला किन्तु उसमें हज़ारों योद्धा मारे गए, जिनमें कौरवों और पांडवों के प्रियजन भी शामिल थे। इतने सारे योद्धाओं का इतने कम समय में एक ही युद्ध में मारे जाना साधारण बात नहीं थी किंतु दुर्योधन ने इसे एकदम मामूली बना दिया था। अपनी राज्य करने

की महत्त्वाकांक्षा को पूरी करने के लिए अपने ही भाई-बंधुओं को मरवाने से नहीं चूका।

(ग) किसने अपने भाइयों को जीवित जलवाने का प्रयास किया? घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर यहाँ वक्ता युधिष्ठिर हैं और वे इस समय दुर्योधन तथा सभी कौरवों के विषय में अपने भाई भीम से बातें कर रहे हैं। दुर्योधन सदा से ही पाण्डवों को अपने रास्ते से हटाने की तरकीबें खोजता रहता था। लाक्षागृह बनवाना भी उसका ऐसा ही कुचक्र था। दुर्योधन ने अपने विश्वासपात्र पुरोचन द्वारा लाक्षागृह का निर्माण करवाकर दावत भव्य आयोजन किया। श्रीकृष्ण को इस षडयन्त्र की भनक लग गई थी इसलिए उन्होंने पांडवों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर लाक्षागृह से बाहर निकलने के लिए एक लंबी सुरंग तैयार करवा ली थी। दावत के बाद पुरोचन ने लाक्षागृह में आग लगवा दी ताकि पांडव उसमें जलकर मर जाएँ लेकिन वे पहले से तैयार सुरंग के रास्ते सुरक्षित बाहर निकल आए। उधर दुर्योधन और उसके साथी यह सोचकर राख हो गए हैं।

(घ) अपनी भाभी को भरी सभा में अपमानित करने की घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- दुर्योधन ने पूरा राज्य पाने की लालसा में शकुनि के साथ मिलकर एक कुटिल चाल चली। शकुनि ने जुए के खेल का आयोजन किया जिसमें युधिष्ठिर को भी जुआ खेलने के लिए आमंत्रित किया। इस खेल में दुर्योधन की तरफ़ से शकुनि खेल रहा था और पांडवों की तरफ़ से युधिष्ठिर खेल रहे थे। युधिष्ठिर इस खेल में उतने निपुण न थे, जितना कि शकुनि। इसलिए युधिष्ठिर हाथी-घोड़े, धन-दौलत आदि एक-एक करके हारते चले गए। अंत में वे द्रोपदी को भी दाँव पर लगा बैठे और हार गए। इस समय दुर्योधन ने भरी सभा में द्रोपदी का चीर हरण किया। हारे हुए युधिष्ठिर तथा अन्य पांडव द्रोपदी को अपमानित होते देखकर भी कुछ नहीं कर पाए, सिर झुकाए चुपचाप खड़े रहे।